4. प्रस्तावित शोध का परिचयात्मक महत्व एवं उद्देश्य

(Interoduction Improtance to proposed Investgation Objectives)

हिन्दी में ऐतिहासिक उपन्यासों की एक सशक्त परम्परा विकसित हुई है। हिन्दी में इस परम्परा की शुरूआत सबसे पहले किशोरीलाल गोस्वामी ने की । तत्पश्चात वृन्दावनलाल वर्मा, भगवतीचरण वर्मा, जयशंकर प्रसाद, राहुल सांकृत्यायन, रांगेय राघव, यशपाल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, चतुरसेन शास्त्री, अमृतलाल नागर, नरेन्द्र कोहली आदि शीर्षस्थ रचनाकारों ने इस विधा को अधिक सशक्त/सम्पन्न और लचीला बनाया है।

ऐतिहासिक उपन्यासों में अतीत के संदर्भ में वर्तमान का ऐसा अध्ययन है। जिसमें अतीत अपने वर्तमान संदर्भ के पर्याप्त संकेतों सहित प्रकट होता है। श्रेष्ठ ऐतिहासिक उपन्यास साहित्य, समाज और भाषा के साथ राष्ट्र की अविचलत संपत्ति है, जो आने वाली पीढ़ी को अतीत के तमाम, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिदृश्यों का परिचय कराता है। इस दृष्टि से ऐतिहासिक उपन्यासों को सांस्कृतिक उपन्यासों की कोटि में भी रखा जा सकता है। इसमें मनुष्य का जीवन अपने सम्पूर्ण राग–विराग के साथ पुनः जीवित होता है।

ऐतिहासिक उपन्यासों में मिथयों का प्रयोग, विश्वासोपार्जन की क्षमता, विषयगत सम्पन्नता, समृद्ध मानवीय दृष्टिकोण आदि गुण विद्यमान रहते हैं। इस दृष्टि से ऐतिहासिक उपन्यास अलग–अलग प्रकार के होते हैं। क्योंकि कहीं–कहीं कुछ तत्व हावी रहते हैं तो कुछ गौण, अतः ऐतिहासिक उपन्यासों

में इतिहास और कल्पना का समावेश, चाहे इसका अनुपात जैसा भी हो अत्यन्त अनिवार्य है।

इतिहास को उपन्यास का आधार बनाकर जब ऐतिहासिक उपन्यासकार अपने कलात्मक कार्य में प्रवृत्त होता है तब वह अनुभावों के अपेक्षा कल्पना पर आधारित संभाव्य सत्य को ही प्रश्रय देता है। जैसे कि उपन्यासकार द्वारा मानव स्वभाव, उसके और उसकी अन्यान्य विशिष्टताओं पर दृष्टि रखकर इतिहास सत्य के चारों ओर एक ऐसे कथानक की रचना करता है जिसमें पाठकों को आस्वादन की एक नयी भावभूमि प्राप्त हो जाती है।

ऐतिहासिक उपन्यास इतिहास और कथा की पुरातन समीपता की नूतन समन्वयात्मक अभिव्यक्ति है, जिसके पीछे युग—युग के अतीतोन्मुखी संस्कार निहित है। उसकी उत्पत्ति विगत आत्म विस्तार की आन्तरिकवृत्ति से हुई है। कथा की कोई भी कल्पना विगत तथा ऐतिहासिक उसी प्रकार अपने को सर्वथा मूल नहीं कर सकती, जिस प्रकार इतिहास अपने को कल्पना से पृथक नहीं कर सकता।

जगदीशगुप्त का कथन इसलिए सही है कि इतिहास की काल्पनिक स्थितियों पर उनका जोर है। साथ ही साथ जीवन का कोई भी प्रसंग विगत या ऐतिह्य से मुक्त नहीं है। तभी वह प्रासंगिक और मूल्यवान है। जब वह इतिहास के चयन के अनुकूल हो, अतः वह एकदम विच्छित्र होकर अग्रसर नहीं हो सकती और इतिहासश्रित कल्पना वैभव का महत्व ही दरअसल ऐतिहासिक उपन्यास के लिए वांछित है।

इतिहास का मानवता के साथ अटूट संबंध है और सभ्यता के आरंभ के साथ हमारा इतिहास भी शुरू होता है। यानी सम्पूर्ण मानव जाति इतिहास में शामिल है। आदिकाल से भिन्न भिन्न जातियाँ, धर्म और विचारधाराएँ किस प्रकार कार्य करती आ रही थी और वे उज्ज्वल भविष्य के लिए कैसे जागरूक

हैं? इनका संकेत इतिहास होता है। रमेश कुन्तल मेघ जी के शब्दों में 'निःसंदेह इतिहास मानवता का एक उज्ज्वल देवालय है। जहाँ जनता, राजवंश घटनाएँ, राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक संस्थाएँ, उनका आदर्श, संस्कृति, रहन–सहन आदि पूर्तिवत् स्थान पाते हैं।

इतिहास से हम विभिन्न प्रकार की प्रेरणाएँ प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि इतिहास में हम मनुष्य के कार्यकलाप, व्यवहार, आचार–विचार, चिंतनशीलता तथा चेतना शक्ति का प्रकटीकरण पाते हैं। ऐतिहासिक उपन्यासकार का वास्तविक जमीन यही इतिहास है और वहीं खड़े रहरक उपन्यासकार अपनी एक अलग जमीन तलाशने लगते हैं। जहाँ वह मौलिक प्रतिभा का प्रदर्शन कर सके। अतः उसे अपनी कल्पना शक्ति का भरपूर प्रयोग करना पड़ता है।

सृजनात्मक कल्पना ऐतिहासिक उपन्यास का उदान्त तत्व है और कल्पना का सीधा संबंध संवेदना से है। अतः संवेदनानुभूति, रागात्मकता और साहित्यिक सौष्ठव के दर्शन केवल ऐतिहासिक है।

उपन्यास

उपन्यास दो शब्दों के योग से बना है। 'उप' और 'न्यास' (उप+न्यास) 'उप' का अर्थ होता है 'समीप' और 'न्यास' का अर्थ होता है, रखी हुई या रखा हुआ।

उपन्यास पुराना शब्द है, अंग्रेजी में जिसे नोवेल ;छवअमसद्ध कहा जाता है।

परिभाषा

- ''मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोजना ही उपन्यास का मूलतत्व है। – **प्रेमचंद**

- मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा उपन्यास है। **– डॉ. श्याम सुंदर दास**
- उपन्यास गद्यमय कल्पित आख्यान के माध्यम से की गयी जीवन की व्याख्या है। **– अरनेस्त अेडेकर**

ऐतिहासिक उपन्यास

(इति+हास) – इतिहास से तात्पर्य है कि हमारा अतीत, हमारा भूत या हमारा बीता हुआ कल, किसी ऐतिहासिक धरातल का कथ्य, तथ्य, घटना अथवा चरित्र को केन्द्र में रखकर लिखा गया उपन्यास ऐतिहासिक उपन्यास कहा जाता है। इन उपन्यासकारों में वृन्दावनलाल चतुरसेन, द्विवेदी, किशोरीलाल, राजीव सक्सेना, गंगाप्रसाद गुप्त, मथुरादास माथुर, बलदेव मिश्र आदि उपन्यासकार जब किसी विशेष प्रयोजन से अनुप्रेरित होकर इतिहास की किसी घटना या व्यक्ति को केन्द्र में रखकर अपनी कथावस्तु का ताना–बाना बुनता है तो ऐतिहासिक सृष्टि की रचना होती है।

- इतिहासकार केवल द्रष्टा है, जबकि 'उपन्यासकार द्रष्टा और सृष्टा दोनो हैं।'

अपने व्यक्तित्व को आरोपित करने का अधिकार सृष्टा का मौलिक स्वत्व है। ऐतिहासिक उपन्यास लिखते समय इस अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता।

जीवन की व्याख्या या उसका चित्र उपस्थित करने के लिए ऐतिहासिक तथ्यों का उसमें कलात्मक संयोजना हुआ करता है। अतः उसमें उपन्यासकार उनमें कला की साधना के लिए कल्पना का समुचित उपयोग भी कर सकता है। ऐतिहासिक उपन्यास पहले उपन्यास है, बाद में अन्य कुछ है।– **डॉ. नारायण भारद्वाज**

जीवन मूल्य

देश–विदेश के विभिन्न दार्शनिकों, चिंतकों, इतिहासकारों, राजनीतिज्ञों, कलाकारों, वैज्ञानिकों, साहित्यकारों और आचार्यों आदि ने जीवन को अपने चिंतन का विषय बनाया है। जीवन एक साधना है, जीवन न सुखमय है, न भार रूप है। अतः मानव जीवन एक गूढ़ विषय है।

जीवन की प्रक्रिया, गतिशीलता, अनुभूति या संवेदना, आत्मपोषण, आत्मबंधन और प्रजनन।

गाँधी के अनुसार ''जीवन एक लालसा है''

डॉ. नगेन्द्र ''मानव जैविक घटक मात्र नहीं है, वह तो चेतना की समस्त अनुभूति है''

मूल्य का अर्थ

व्युत्पति (मूल+पत्) अर्थ दिये जाने वाला धन आदि। यह मूलतः अर्थशास्त्र का शब्द है, जिसका आशय मनुष्य की किसी वस्तु की इच्छा पूर्ति के बदले धन त्याग की तत्परता से उसका मूल्य निर्धारित होता है।

मूल्य शब्द अंग्रेजी के टंसनम शब्द का अनुवाद है जिसका अर्थ अच्छा, ठीक, अतः जो इच्छित है, वही मूल्य है।

अतः ऐतिहासिक उपन्यासों में जीवनोन्मुखी कल्पना का प्रयोग होता है, इतिहासिकता में कल्पना का समावेश भी होता है।

राजेन्द्र मोहन भटनागर राजस्थान के मूर्घन्य साहित्यकार हैं। आपको राजस्थान साहित्य अकादमी का सर्वोच्च मीरा पुरस्कार, विशिष्ट साहित्य सम्मान, अखिल भारतीय समर स्मृति पुरस्कार, साहित्य सम्मान पुरस्कार,

घनश्यामदास सहल सर्वोत्तम पुरस्कार, साहित्य सम्मान पुरस्कार आदि अनेकों, राष्ट्रीय तथा प्रादेशिक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। वर्तमान में भी आपकी लेखनी निरन्तर कार्यरत है। आप जीवनीपरक ऐतिहासिक उपन्यास तथा नाट्य वाङ्मय के लिए विख्यात हैं। आपके 13 कहानी संग्रह, 67 उपन्यास, 14 नाटक प्रकाशित हो चुके हैं। जिनमें 17 ऐतिहासिक उपन्यास है। डॉ. भटनागर ने अपने लेखन के जरिए इतिहास को वर्तमान और उसकी समस्याओं के निदान से जोड़ने जैसा महत्वपूर्ण कार्य किया है। वह विश्व के पहले ऐसे साहित्यकार हैं, जिन्होंने एक ही पात्र–एक ही कथा पर अनेक उपन्यास लिखे, जैसे महाराणा प्रताप, मीरा इत्यादि। भटनागर कहते हैं कि ''आज संसार में भारत का स्थान इसलिए प्रमुख हैं, क्योंकि विश्व में सर्वश्रेष्ठ गरिमापूर्ण इतिहास रहा है। यही कारण है कि मैंने भारत के अतीत की जाँच पड़ताल कर उस पर भी उपन्यास लेखन किया।'' ''भटनागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में जीवन मूल्य'' विषय पर शोध कार्य करने में मैं बहुत हर्ष महसूस कर रहा हूं क्योंकि इस विषय के माध्यम से मैं भारत के गौरवशाली अतीत का पुनर्पठन करने के साथ ही वर्तमान में बदलते जीवन मूल्यों के स्थान पर शाश्वत जीवन मूल्यों की पुनर्स्थापना करने में अपनी अहम भूमिका का निर्वाह करने की कोशिश कर सकूंगा।

भारत राष्ट्र के अतीत की गौरवशाली परम्परा तथा उदात्त सांस्कृतिक जीवन शैली एवं मूल्यों की विस्तृत समीक्षात्मक विवेचना करना मेरे शोध कार्य का मुख्य विषय रहेगा।

प्रस्तावित शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य–

1. राजेन्द्र मोहन भटनागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में जीवन मूल्य स्पष्ट करना।
2. भटनागर के उपन्यासों में जीवन मूल्य का महत्व स्पष्ट करना।
3. जीवन मूल्य के द्वारा मानवीय संवेदना व्यक्त करना।
4. वर्तमान परिदृश्य में मनुष्य की निराशा, कुण्ठा, सन्त्रास की भावना के निराकरण हेतु शाश्वत जीवन मूल्य के महत्व को स्पष्ट करना।
5. भारत के गौरवशाली अतीत का पुनर्पठन कर उदत्त सांस्कृतिक–सामाजिक जीवन मूल्यों की पुनः स्थापना करना।
6. ऐतिहासिकता से परिपूर्ण जीवनमूल्य का मानव मात्र से साक्षात्कार करवाना।
7. हिन्दी उपन्यास साहित्य के इतिहास में ऐतिहासिकता के विषय की व्यापकता को स्पष्ट करना।
8. भटनागर के उपन्यासों में वर्णित मानवीय संवेदना, अनुभूति, गंभीर चिंतन, जीवन मूल्यों को जनमानस तक पहुँचाना।
9. विषमताओं को निरस्त करने के लिए निरन्तर प्राणी मात्र के लिए संघर्षशील रहे रचनाकार भटनागर के प्रेरणास्पद जीवन को प्रस्तुत करना।
10. भटनागर के उपन्यासों में ऐतिहासिकता के माध्यम से जीवन मूल्य को खोजना, उसका सामाजिक महत्व स्पष्ट करना।

5. प्रस्तावित शोध के विषय पर पूर्व में किए गए कार्यों की समीक्षा

Reviwe (Work already done on the subject of proposed Research study)

पूर्व में हुए शोध कार्य का सिंहावलोकन समकालीन जीवन मूल्य पर आधारित विभिन्न लेखक, लेखिकाओं के उपन्यासों एवं व्यक्तियों पर शोध कार्य हुए हैं। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध विषय राजेन्द्र मोहन भटनागर के ''ऐतिहासिक उपन्यासों में जीवन मूल्य'' में चयन के दौरान प्रारम्भ में हुए शोध कार्यों एवं उनके ग्रंथ अद्योलिखित है।

1. **सुरेशचन्द्र सलुनके** ''गिरिराज किशोर के उपन्यासों में साहित्यिक अनुशीलन'' लेखक ने किशोर के उपन्यासों के माध्यम से स्त्री, कमजोर वर्ग तथा समाज की परिस्थितियों का उल्लेख है।
2. **शाजू टी.पी.**''ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास एवं कल्पना की भूमिका'' इसमें अतीत के संदर्भ में वर्तमान का अध्ययन संकेतों के माध्यम से किया है। कल्पना के द्वारा पूर्व में हुई घटनाओं का वर्णन किया गया है।
3. **मलिक तेजवीर (2005)** ''आचार्य द्विवेदी के उपन्यासों का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन'' द्विवेदी के उपन्यासों में सांस्कृतिक अध्ययन सामाजिक जीवन और उसमें होने वाले परिवर्तनों का वर्णन है।
4. **त्यागी मुक्ता (2001)** ''समकालीन महिला उपन्यासों'' नारी में कृष्णा सोबती, मृणाल पाण्डे, प्रभाखेतान के संदर्भ में महिलाओं की समस्याओं को तथा उनके जीवन मूल्यों को दर्शाया गया है।

5. **दीपानबिता (2006)** ''द्विवेदी के उपन्यासों में दिव्यांग विमर्श ऐतिहासिक परम्परा साधना तथा मानवता के आलोक को दर्शाया है तथा कमजोर वर्ग की ओर ध्यान आकर्षित किया है।

6. **एम मोहनन (2004)** ''समकालीन हिन्दी उपन्यास'' कमजोर वर्ग की समस्याओं को ऐतिहासिक स्तर पर उद्वेलित किया है तथा समकालीन स्थिति का वर्णन किया है।

7. **मैथ्यू थॉमस (2013)** ''अमृतलाल नागर के उपन्यासों में अभिव्यक्त मानवतावादी जीवनवाद'' स्वतंत्र्योत्तर कथा साहित्य के क्षेत्र में युगांतकारी उपन्यासों के माध्यम मानवीय जीवन की संवेदनाओं को व्यक्त किया है।

8. **मैथ्यू जे.पी. (2013)** ''नागार्जुन के काव्य में मानवतावादी चेतना'' उपन्यासों के माध्यम से समाज के भीतर के अंतर्विरोध को स्पष्ट किया है। अमानवीयता और मूल्यहीनता का विरोध करते हुए मानवतावादी युग को स्थापित किया है।

9. **अंसारी एम.नजमा (2011)** ''उपन्यासकार शिवानी संवेदना और शिल्प'' इस अध्ययन में मानवीय मूल्यों तथा मानवीय संवेदनाओं और शिल्प को स्पष्ट किया गया है।

10. **पंड्या जागृति एन. (2010)** ''समसामयिक चेतना के परिप्रेक्ष्य में कमलेश्वर के उपन्यासों का अध्ययन'' इस अध्ययन में वर्तमान समय में होने वाली घटनाओं, जनचेतना को स्पष्ट किया गया है।

11. **शर्मा मोहिनी (1986)** ''हिन्दी उपन्यास और जीवन मूल्य'' इस अध्ययन में उपन्यासों के माध्यम से मानवीय जीवन मूल्यों का महत्व स्पष्ट किया गया है।

12. **भण्डारे सुकुमार (2007)** ''समकालीन हिन्दी उपन्यासों का चित्रण'' इस अध्ययन में वर्तमान में होने वाली घटनाओं का तथा नये–नये परिवर्तनों का वर्णन किया गया है।

13. **बानी सुनीता (2007)** ''रांगेय राघव के उपन्यासों में मानव मूल्य'' इस अध्ययन में चीवर जैसे उपन्यासों के माध्यम से समाज में मनुष्य की की आवश्यकताओं और उनके महत्व को स्पष्ट किया है।

14. **खन्ना मोनिका (2005)** ''मानव मूल्यों के संदर्भ में जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों का अध्ययन'' इस अध्ययन में जैनेन्द्र मनोविश्लेषण वाद के माध्यम से समाज की घटनाओं और मनोवैज्ञानिकता का वर्णन किया है।

15. **आनन्द कंचनलता (2000)** ''प्रसाद और राय की मूल्य चेतना'' इस अध्ययन में मानवीय मूल्यों का उपन्यासों के माध्यम से वर्णन किया गया है।

16. **सिंह जवाहर** ''भगवती चरण वर्मा के उपन्यास और युगचेतना'' इस अध्ययन में वास्तविकता, सटीकता, ऐतिहासिकता का सटीक चित्रण है। जिसके माध्यम से सामाजिक स्थिति का वर्णन स्पष्ट किया है।

17. **अरोड़ा रामस्वरूप (1986)** ''प्रेमचन्दोतर उपन्यासों में सांस्कृतिक मूल्यों का विघटन'' इस अध्ययन में प्रेमचन्द के बाद के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति व सभ्यता का वर्णन किया है।

18. **भटनागर रामरतन (1951)** ''हिन्दी के छः उपन्यासः एक अध्ययन'' इस अध्ययन में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को प्रमुख मानकर सामाजिक स्थिति का वर्णन है।

19. **सोनी के.पूनम (2016)** ''जगदीश चन्द्र के उपन्यासों में दलित चेतना एक अनुशीलन'' इस अध्ययन में कमजोर वर्ग का वर्णन किया गया है। उनके साथ होने वाले अत्याचार का अध्ययन है।

20. **शर्मा मक्खन लाल (1984)** ''हिन्दी उपन्यास सिद्धान्त और समीक्षा'' इस अध्ययन में उपन्यासपरख सिद्धान्तों का प्रमुख रूप से उल्लेख है तथा उनका स्वरूप समीक्षात्मक है।

21. **सेठी डॉ. हरीश (2008)** ''जीवन मूल्य और विमर्श'' इस अध्ययन में मानवीय जीवन मूल्यों को विमर्श के माध्यम से स्पष्ट किया है।

22. **गुप्त डॉ. लालचन्द मंगल (2003)** ''आधुनिक युगबोध और साहित्य'' इस अध्ययन में वर्तमान में साहित्य के माध्यम से आधुनिक परिवर्तनों को स्पष्ट किया है।

23. **देसाई पारूकान्त (2002)** ''हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परम्परा में साठोतरी उपन्यास'' इस अध्ययन में 1960 के बाद के उपन्यासों का वर्णन है, जिनमें ऐतिहासिक, जासूसी आदि का स्पष्टीकरण है।

24. **पालीवाल शोभारानी** ''अमृतलाल नागर के उपन्यासों में सामाजिक चेतना'' इस अध्ययन में जीवनीपरक जैसे उपन्यासों के माध्यम से समाज को प्रेरित करता है, जो ऐतिहासिकता को भी स्पष्ट करता है।

25. **मधुरेश (2002)** ''हिन्दी उपन्यास की सार्थकता की पहचान'' इस अध्ययन में मुख्य पृष्ठभूमि को सामाजिक हित के रूप में स्पष्ट किया है।

26. **फोक्स रेल्फ (1984)** ''उपन्यास और लोकजीवन'' इस अध्ययन में उपन्यासों के माध्यम से समाज के रहन–सहन, खान–पान का वर्णन है, जो ऐतिहासिक स्तर पर है।

27. **राय सरिता (1996)** ''उपन्यासकार प्रेमचन्द की सामाजिक चिंता'' इस अध्ययन में समाज की गंभीर समस्याओं को स्पष्ट किया है, समाज के बिगड़ते हुए हालातों को दर्शाया है।

28. **रावत वेद प्रकाश (1980)** ''उपन्यासकार हजारी प्रसाद द्विवेदी'' उपन्यासों में बाणभट्ट की आत्मकथा आदि के माध्यम से ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को वर्णित किया गया है।

29. **यादव राजेन्द्र (1997)** ''हिन्दी उपन्यासोंः स्वरूप और संवेदना'' के उपन्यासों में मानवीय संवेदना के स्वरूप के पूर्णतः उकेरा गया है, जो प्रमुख रूप से ऐतिहासिक है।

30. **श्रीवास्तव परमानंद (1995)** ''उपन्यासों का पुनर्जन्म'' नयी पीढ़ियों से संवम्बन्धि उपन्यासों का तथा वर्तमान परिस्थितियों का वर्णन है।

31. **आदर्श ब्रजभूषण** ''हिन्दी के राजनीतिक उपन्यासों का अनुशीलन'' इनके उपन्यासों में भारतीय संस्कृति व समाज में राजनीति के महत्वों तथा राजनीतिक स्थितियों का वर्णन है।

32. **विजयलक्ष्मी कु. (2015)** ''हिन्दी की प्रमुख लेखिकाओं के उपन्यासों में बदलते जीवन मूल्य'' भारतीय संस्कृति एवं जीवन मूल्यों को जीवन्त करने हेतु प्रेरित करते हैं।

प्रस्तुत शोध राजेन्द्र मोहन भटनागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में जीवन मूल्य पर आधारित है। उपन्यासों में अनवरत रूप से कार्य हो रहा है। मेरे द्वारा ऐतिहासिक उपन्यासों में विशेष रूप से जीवन मूल्यों की खोज करना और उसे स्पष्ट करना है।

6. शोध के प्रस्तावित क्षेत्र में शोध कमियों की पहचान

शोध के प्रस्तावित क्षेत्र में शोध कमियों की पहचान उपन्यास के क्षेत्र में लेखकों के उपन्यासों पर नारी जागृति, नारी समस्याऐं, जीवनी परक उपन्यास, उपन्यास विमर्श आदि पर अनेक शोध कार्य हो चुके हैं, परन्तु हिन्दी में ऐतिहासिक उपन्यासों पर कम शोध हुआ है। भटनागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में समाज को जागृत करने का कार्य किया है। प्राचीन इतिहास में लोगों की समस्याऐं तथा स्त्री, दलित, कामगार मजदूर तथा युद्ध, जनता की समस्याऐं आदि के क्षेत्र में विशेष कार्य किया है।

जीवनी परक उपन्यासों को ऐतिहासिक रूप प्रदर्शित किया है। युग पुरूषों के इतिहास से लोगों को प्रेरित किया है।

वर्तमान में बदलते स्वरूप में नव–उन्मेषित विषमताओं और असंगतियों ने समाज, राजनीति, मानवता आदि को प्रभावित किया है। मानवीय जीवन में नई–नई समस्याएँ आने से प्रभावित होते हैं। उनके जीवन के प्रति नया दृष्टिकोण स्थापित करना और समाज को नये आधार से जोड़ना ऐतिहासिकता प्रमुख माध्यम है।

प्रस्तुत शोध में पूर्ववर्ती ऐतिहासिक जीवनी की समस्याएँ समसामयिक समस्याऐं तथा जीवन मूल्य से बदलते हुए समाज के स्वरूप, समाज की बढ़ती समस्याऐं, ऐतिहासिक समाज शास्त्र, मनोवैज्ञानिक की दृष्टि से डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर के मौर्य सम्राट, युग अम्बेडकर, नीले घोड़े का सवार तरूण सन्यासी आदि साहित्यिक संरचनाओं में बहुआयामी चित्रण विभिन्न आयामों के माध्यम से शोध कार्य किया जायेगा।

7. मुख्य परिकल्पना

(Major Hypothesis)

ऐतिहासिक उपन्यासकार अपने कलात्मक कार्य द्वारा अपने अनुभावों पर आधारित संभाव्य को प्रश्रय देता है। राजेन्द्र मोहन भटनागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में जीवन मूल्य विषय के द्वारा अतीत के बारे में जानकारी एवं उसकी उपादेयता को निर्दिष्ट करने की कल्पना है।

प्रथम अध्याय में नवजागरणकाल और ऐतिहासिक उपन्यासों के इतिहास का अध्ययन, इतिहास और साहित्य का सहसम्बन्ध एवं राजस्थान के साहित्यकारों द्वारा लिखे गये तद्विषयक उपन्यासों का अध्ययन किया जायेगा।

द्वितीय अध्याय में जीवन मूल्यों का स्वरूप एवं उनके वर्गीकरण के अन्तर्गत जीवन मूल्य का अर्थ एवं स्वरूप भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणा, उनका आधारभूत वर्गीकरण, उनका साहित्य के साथ अन्तः सम्बन्ध एवं जीवन दृष्टि का अध्ययन किया जायेगा।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत राजेन्द्र मोहन भटनागर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला जायेगा। इसके साथ ही इसके बहुआयामी साहित्यिक सृजनकर्ता स्वरूप का अध्ययन किया जायेगा।

चतुर्थ अध्याय में राजेन्द्र मोहन भटनागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के प्रतिपादन का वर्णन किया जायेगा।

पंचम अध्याय में राजेन्द्र मोहन भटनागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में राष्ट्रीय जीवन मूल्य जैसे राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय संचेतना, मानवतावादी दृष्टिकोण आदि को प्रतिस्थापित किया जायेगा।

षष्ट्म अध्याय में राजेन्द्र मोहन भटनागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में सौन्दर्यपरख मूल्य, भागवत एवं कलागत विशेषताओं आदि तत्वों की प्रतिस्थापना की जायेगी।

उपसंहार

8. अध्ययन शोध प्रविधि

(Research Methodology)

प्रस्तावित शोध कार्य वर्तमान समय में मानव जीवन के प्रति ऐतिहासिक दृष्टिकोण के कारण हिन्दी गद्य में (उपन्यास) से प्रभावित हे। समाज में प्राचीन ऐतिहासिक स्वरूप में जीवन की चेतना का माध्यम स्थापित करते हैं। उनका अध्ययन करना। शोध के क्षेत्र में वर्तमान स्वरूप में नये–नये आयामों को जोड़ा है। शोध कार्यों में शिक्षण के स्वरूप की प्रक्रिया या अनुदेशन को प्राथमिकता दी जाती है।

समाज में भटनागर ने ऐतिहासिक उपन्यासों के माध्यम से जीवन मूल्य को आधार बनाया जाएगा। हिन्दी उपन्यासों के माध्यम से समाज की समस्याओं को उजागर करना। प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक, समाज शास्त्र एवं जीवन मूल्यों पर आधारित है।

एक शोधक की दृष्टि से समाज के स्वरूप को प्राणी मात्र से अवगत कराना व समस्याओं को उद्घाटित करना मेरा प्रमुख दायित्व है।

प्रस्तुत शोध के लिए मुझे जिस शोध प्रविधि और प्रक्रिया से गुजरना होग, उसका क्रम अधोलिखित है।

- शोध विषय हेतु ऐतिहासिक उपन्यासों का संकलन किया जायेगा।
- शोध विषय से संबंधित संदर्भ पुस्तकों एवं ग्रंथों से सामग्री संकलित की जायेगी।
- शोध विषय में संबंधित पूर्ववर्ती शोधकों के ग्रंथों से सूचनाऐं प्राप्त की जाएगी।

- विषय विशेषज्ञों एवं पूर्ववर्ती शोधकों से परामर्श एवं सूचनाएँ प्राप्त की जायेगी।
- ऐतिहासिक उपन्यासों से संबंधित सभी प्रकार के साहित्य और आँकड़े समाज कल्याण विभाग से संग्रहित करना।
- ऐतिहासिक उपन्यासों से सम्बन्द्ध समीक्षा और शोध परख साहित्य का संकलन।
- विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं, स्मारिकाओं का संकलन जिनमें ऐतिहासिक उपन्यासों आदि उल्लेखित हो।
- ऐतिहासिक उपन्यासों के प्रमुख आचार्यों/समीक्षक/कथाकारों से साक्षात्कार करना।
- समाज में ऐतिहासिक उपन्यासों को बढ़ावा देने के लिए शोध कार्य को प्रभावी बनाया जायेगा।
- इंटरनेट पर उपलब्ध विभिन्न वेबसाइट जैसे ूपापचमकपंए हववहसमए वेबपेज ;टमइ चंहमद्धए होम पेज ;भ्वउम चंहमद्धए ई–मेल ;म्.उंपसद्धए याहू ;लींववद्धए वेब दुनिया आदि के द्वारा सूचना संकलित की जायेगी।
- प्रश्नावालियों का प्रयोग किया जायेगा, जिनमें जीवन मूल्यों का उल्लेख हो।
- अनुसूचियों का प्रयोग किया जायेगा।

शोध कार्य में छायाचित्र प्रस्तुत किय जायेंगे। उपर्युक्त आधार पर शोध कार्य को सम्पन्न किया जायेगा।

राजेन्द्र मोहन भटनागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में जीवन मूल्य

पूर्व पीटिका

– विषय प्रवेश

– विषम का महत्व

– विषय की उपयोगिता

प्रथम अध्याय– नवजागरणकाल और ऐतिहासिक उपन्यासों का इतिहास

1.1 नवजागरणकाल और उपन्यास इतिहास

1.2 इतिहास और साहित्य का सह–संबंध

1.3 ऐतिहासिक साक्ष्य तथा उनके समय की सामाजिक/सांस्कृतिक चेतना

1.4 राजस्थान के साहित्यकारों द्वारा उचित उपन्यास साहित्य

द्वितीय अध्याय– जीवन मूल्यों का स्वरूप एवं वर्गीकरण

2.1 जीवन मूल्य अर्थ एवं स्वरूप

2.2 जीवन मूल्यों की भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारण

2.3 जीवन मूल्यों का आधारभूत वर्गीकरण

2.4 जीवन मूल्य और साहित्य का अन्तः संबंध

2.5 जीवन मूल्य एवं जीवन दृष्टि

2.6 सामयिक जीवन मूल्यों का सृजन

तृतीय अध्याय– राजेन्द्र मोहन भटनागर का व्यक्तित्व एवं कृतित्वः एक परिचय

3.1 जीवनवृत्त

(क) जन्म, शिक्षा एवं अन्य घटनाएँ

(ख) डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर का व्यक्तित्व

3.2 साहित्यिक वृत्त

(क) कहानीकार

(ख) उपन्यासकार

(ग) नाटककार

(घ) डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर और साहित्य की अन्य विधाएँ

चतुर्थ अध्याय– राजेन्द्र मोहन भटनागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन मूल्य

4.1 इतिहास दृष्टि और समाज

4.2 सामाजिक परम्पराओं में परिवर्तन एवं समसामयिक जीवन मूल्य

4.3 समसामयिक सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेशगत संघर्षों का प्रतिपादन

4.4 इतिहास नायक नायिकाओं के आंतरिक एवं बाह्य संघर्षों में जीवन मूल्य का महत्व

4.5 ऐतिहासिक उपन्यासों में धर्म का स्वरूप एवं जीवन मूल्य

4.6 ऐतिहासिक उपन्यासों में अर्थ का स्वरूप एवं जीवन मूल्य

4.7 ऐतिहासिक उपन्यासों में संस्कृति का स्वरूप एवं जीवन मूल्य

पंचम अध्याय– राजेन्द्र मोहन भटनागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में राष्ट्रीय जीवन मूल्य

5.1 राष्ट्र, राष्ट्रवाद और राष्ट्रीयता/भारतीय राष्ट्रीय संचेतना

5.2 ऐतिहासिक उपन्यासों में राष्ट्रीय जीवन मूल्य

5.3 नैतिकतावादी मूल्यों की प्रतिस्थापना

5.4 मानवतावादी मूल्य

षष्ठ अध्याय– राजेन्द्र मोहन भटनागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में सौंदर्यपरक मूल्य

6.1 ऐतिहासिक उपन्यासों में सौंदर्यपरक मूल्यों की प्रतिस्थापनाएँ

6.2 ऐतिहासिक उपन्यासों की भाषागत विशेषतायें

6.3 ऐतिहासिक उपन्यासों की उपलब्धि

6.4 ऐतिहासिक उपन्यासकार की प्रतिबद्धतायें

निष्कर्ष

9. राजेन्द्र मोहन भटनागर के ऐतिहासिक उपन्यास

Rayendra Bhatnagar Ka Itihasik Upniyor

1.	नीले घोड़े का सवार	:	राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, प्रकाशित वर्ष 2005
2.	तरूण सन्यासी	:	वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन, उत्तर प्रदेश, प्रकाशित वर्ष 2001
3.	मौर्य सम्राट	:	वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली–2014
4.	एक अन्तहीन युद्ध	:	नव प्रकाशन जोधपुर 1990
5.	सरदार	:	राजपाल एण्ड सन्स पब्लिकेशन, दिल्ली 1 जनवरी 2003
6.	युगपुरूष अम्बेडकर	:	राधा ऑफसेज दिल्ली राजपाल एण्ड सन्स, प्रकाशन वर्ष 2016
7.	दिल्ली चलो	:	राजपाल एण्ड सन्स पब्लिकेशन, दिल्ली 2005
8.	गोपी व राधा	:	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 01 जनवरी 2017
9.	स्वराज्य	:	परमेश्वर प्रकाशन दिल्ली, 2001 संस्करण 2012
10.	अन्तिम सत्याग्रही	:	उपलब्ध नहीं 01 जनवरी 2014

11.	कापड़े आजम	:	आर.आर.सेठ प्राइवेट लिमिटेड प्रकाशित वर्ष 01 अक्टूबर 2016
12.	सुरश्याम	:	सुनील साहित्य सदन, नई दिल्ली प्रकाशित वर्ष 2011
13.	प्रेम दीवानी	:	एम.एन. पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रकाशित वर्ष 1993
14.	वैलेंटाइनडे	:	नेशनल पब्लिशर्स हाउस, नई दिल्ली प्रकाशित वर्ष 2003

अन्य उपन्यास

व्जीमत छवइसम

1. अज्ञातवास का हमसफर :मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स दिल्ली, 2015
2. कुली बैरिस्टर : राजपाल प्रकाशन दिल्ली, 2008
3. आजादी की पहली लड़ाई : सामाजिक प्रकाशन दिल्ली, 2005
4. खुदा गवाह है : आत्माराम एण्ड संस दिल्ली, 2001
5. गौरांग : राजपाल प्रकाशन दिल्ली, 2009
6. दलित संत : राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, 2015
7. नगरी मानगढ़ में गोविंदगिरीः वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 01 जनवरी 2011
8. डॉ. अम्बेडकर (चिन्तन और विचारवाणी प्रकाशन दिल्ली, 31 जनवरी 1899
9. आज की ताखा खबर : प्रभात प्रकाशन दिल्ली, 01 मई 2011
10. कुली वेरिस्टर : गुर्जर ग्रंथ प्रकाशन, 01 जनवरी 2014
11. सुभाष एक खोज : किताब घर प्रकाशन उ.प्र., 01 जनवरी 2015
12. योगी अरविंद : राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, 01 जनवरी 2016
13. देश : राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, 01 जनवरी 2012
14. विवेकानंद : राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, 2015
15. सूर्यवंश का प्रताप : अनुराग प्रकाशन दिल्ली, 2005
16. मंचनायक : समसामयिक प्रकाशन दिल्ली, 1978

17. माटी कहे कुम्हार से: राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, 1993

18. सेनानी: जयपुर चिल्ड्रन बुक हाऊस, 2001

19. भारतीय शिक्षा और साक्षरता : कल्याणी शिक्ष परिषद,नई दिल्ली 2010

20. भारतीय कांग्रेस तब और अब : इंडियन पब्लिशर्स दिल्ली, 2005

21. शहादत : राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली प्रथम संस्करण, 2017

संदर्भ ग्रन्थ (सहायक ग्रन्थ)

1. हिन्दी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग (1973) डॉ. त्रिभुवन सिंह, हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी (उ.प्र.)
2. हिन्दी उपन्यास शिल्प : बदलते परिप्रेक्ष्य (1968) डॉ. प्रेम भटनागर, अर्चना प्रकाशन, कानपुर
3. हिन्दी उपन्यासों में युग चेतना एवं पाठकीय संवेदना : डॉ. मुकुन्द द्विवेदी,अर्चना प्रकाशन कानपुर
4. हिन्दी के राजनीतिक उपन्यासों का अनुशीलन : ब्रजभूषण आदर्श
5. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद (1984) : डॉ. त्रिभुवन सिंह, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस
6. हिन्दी उपन्यास साहित्य : शिल्प का स्वरूप और विकास (1975) शशिभूषण अग्रवाल, कैलाश पुस्तक सदन, ग्वालियर (मध्यप्रदेश
7. उपन्यास का शिल्प (1973) – डॉ. गोपालराव बिहारी हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना
8. उपन्यास : तत्व एवं रूप विधान (1962) डॉ. श्री नारायण आचार्य शुक्ला सदन कानपुर अग्निहोत्री (उ.प्र.)
9. प्रेमचन्द्रोतर उपन्यासों की शिल्पविधि (1968) : डॉ. सत्यपाल चुध लोक भारती प्रकाशन।
10. स्वातन्त्रोत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य में शिल्प विधि का विकास (1983) डॉ. तहसीलदार दुबे नटराज पब्लिशिंग हाउस करनाल (हरिद्वार)
11. हिन्दी उपन्यासों का शिल्प विधान की प्रवृत्तिय (1983) डॉ. शशिभूषण सिंहल विनोद पुस्तक मंदिर आगरा द्वितीय संस्करण।

12. हिन्दी उपन्यासों का शिल्प विधान (1990) डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा अभय प्रकाशन कानपुर उत्तरप्रदेश

13. हिन्दी उपन्यासों की शिल्पविधि का विकास (1964) डॉ. ओम शुक्ला अनुसंधान प्रकाशन

14. हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक चेतना (2009) संस्करण डॉ. राजेश रानी के.के. पब्लिकेशन्स दिल्ली।

15. हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक चेतना (1998) प्रथम संस्करण डॉ. लाल साहब संजय प्रकाशन नई दिल्ली।

16. जीवन मूल्य विमर्श (2008) डॉ. हरीश सेठी संजय प्रकाशन 2008 नई दिल्ली।

17. हिन्दी उपन्यास का साहित्य (2013) गोपाल राय राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।

18. हिन्दी उपन्यास साहित्य पर वैचारिक आंदोलन का प्रभाव (1996) : डॉ. पी.के.पद्या, पंकज पब्लिकेशन मुक्तेश्वर (उ.प्र.)

19. भोजपुरी उपन्यासों में जीवन मूल्य (2008 प्रथम संस्करण) : डॉ. बलराम, डी.पी.एस. पब्लिकेशन हाउस

20. हिन्दी उपन्यासों : समाजशास्त्री विवेचना (1962) डॉ. चन्द्रप्रसाद जोशी अनुसंधान प्रकाशन कानपुर (उ.प्र.)

21. आधुनिक बोध और आधुनिकीकरण (1986) डॉ. राजेश कुन्तल मेघ अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली।

22. आधुनिक हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास (1982) डॉ. बैचेन उग्र सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली।

23. हिन्दी उपन्यास सिद्धान्त और समीक्षा (1984) मक्खन लाल शर्मा प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

24. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार (2007) वैशाली देशपांडे विकास प्रकाशन कानपुर (उ.प्र.)

25. आधुनिक साहित्य : मूल्य और मूल्यांकन (2002) अरिविन्द जैन राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

26. स्वातन्त्रोत्तर हिन्दी लेखिकाओं के उपन्यासों में अलगाव (1987) नीलम गोपाल, अमृतसर विश्व हरियाणा ।

27. भारतीय जीवन मूल्य और ज्ञानपीठ पुरस्कार (2003) प्रमोद कोटवप्रद सार्थक प्रकाशन, नई दिल्ली।

28. आधुनिक हिन्दी उपन्यास और मानवीय अर्थवता (1977) नवल किशोर प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।

29. उपन्यासकार राजेन्द्र यादव समाजशास्त्रीय अध्ययन (2002) राजेन्द्र यादव, संजय प्रकाशन नई दिल्ली।

30. प्रसाद और राय मूल्य चेतना (2000) कंचनलता आनन्द, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली।

31. हिन्दी उपन्यास स्वतंत्रता संघर्ष के विभिन्न आयाम, डी.डी. तिवारी तिक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।

32. आधुनिक साहित्य और इतिहास बोध (1994) नित्यानंद तिवारी वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

33. हिन्दी उपन्यासः पृष्ठभूमि और परम्परा (1966) बदरीदास ग्रन्थम प्रकाशन कानपुर उ.प्र.।

34. उपन्यास स्थिति और गति (1993) चन्द्रकान्ता वांदिवडेकर वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।

35. हिन्दी उपन्यासः समाशास्त्रीय विवेचन (1962) डॉ. चंदीप्रसाद जोशी अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर (उ.प्र.)

36. वैशाली की नगरवधू (1998–99) चतुरसेन शास्त्री, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।

37. वाणभट्ट की आत्मकथा (2010) हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन दिल्ली।

38. अहिल्याबाई (2008) वृन्दावनलाल वर्मा, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली।

39. रजिया बैगम (2000 दूसरा संस्करण) किशोरीलाल गोस्वामी श्री सुदर्शन प्रेस वृन्दावन (उ.प्र.)

40. अवध की बैगम (1905) गंगाप्रसाद गुप्त, राजकमल प्रकाशन दिल्ली।

41. मुसाहिबजू (2008) वृन्दावन लाल वर्मा, प्रभात प्रकाशन दिल्ली।

42. वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन और दाम्पत्य जीवन (2004) साधना अग्रवाल, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।

43. हिन्दी उपन्यास का साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन (1984 प्रथम संस्करण) डॉ. रमेश तिवारी, रचना प्रकाशन इलाहाबाद (उ.प्र.)

44. महिला उपन्यासकारः पारिवारिक जीवन के बदलते संदर्भ (2010) डॉ. कल्पना पटोले, विद्या प्रकाशन कानपुर (उ.प्र.)

45. हिन्दी उपन्यास की अन्तर्यात्रा (2012 तीसरा संस्करण) रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।

46. स्वातंत्रोत्तर हिन्दी उपन्यासों में वैचारिकता (2000) डॉ. आशा मेहता, ग्रंथ निकेतन संस्करण नई दिल्ली।

47. हिन्दी की प्रमुख लेखिकाओं के उपन्यासों में बदलते जीवन मूल्य (2014–15) कु. विजय लक्ष्मी (कुमायूं नैनीताल) उत्तराखण्ड।

48. चीवर (2004) रांगेय राघव, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली।

49. नूरजहाँ (2016) मेवराम राही प्रकाशन दिल्ली।

50. कुसुम कुमारी (2009) देवकीनंदन खत्री, राजकमल प्रकाशन दिल्ली।

पत्र–पत्रिकाऐं

क्र.सं.	पत्र–पत्रिकाऐं	संपादक	प्रकाशक
1	मधुमती (मासिक)	डॉ. प्रमोद भट्ट	राजस्थान साहित्य अकादमी जयपुर
2	राजस्थान पत्रिका (दैनिक)	गुलाब कोठारी	पत्रिका समूह, जयपुर संस्करण
3	दैनिक भास्कर (दैनिक)	मधु आचार्य	भास्कर समूह, जयपुर संस्करण
4	दैनिक नवज्योति (दैनिक)	दीनबंधु चौधरी	नवज्योति समूह, जयपुर संस्करण
5	हंस (मासिक)	संजय सहाय	अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली।
6	वागार्थ	विजय बहादुर सिंह	भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता
7	नया ज्ञानोदय (मासिक)	अखिलेख जैन	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
8	कथादेश (मासिक)	हरिनारायण	सहयात्रा प्रकाशन, नई दिल्ली
9	पाखी (मासिक)	प्रेम भारद्वाज	इंडिपेंडेट मीडिया इनिशिएटिव सोसायटी, नोएडा, उत्तरप्रदेश
10	आलोचना (त्रैमासिक)	प्रो. नामवर सिंह	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
11	वसुधा (त्रैमासिक)	स्वयं प्रकाश	प्रगतिशील वसुधा, भोपाल म.प्र.
12	बहुवचन (त्रैमासिक)	अशोक मिश्र	महात्मा गाँधी अर्न्तराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा
13	साक्षात्कार (मासिक)	उमेश कुमार सिंह	साहित्य अकादमी भोपाल, मध्यप्रदेश
14	आजकल (मासिक)		प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली

15	राजभाषा भारती (त्रैमासिक)		राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, दिल्ली
16	समकालीन सर्जन	शंभूनाथ	कोलकाता
17	कथा (त्रैमासिक)	मार्कण्डेय	इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश
18	संवदिया	श्री भोपा पंडित प्रभावी	अरटिया बिहार
19	समीक्षा	सत्यकाव्य	नई दिल्ली, 01 मई 2008
20	आधारशिला	दिवाकर भट्ट	नैनीताल उत्तराखंड, 8 मई 2011
21	अमर उजाला (दैनिक)		उत्तरप्रदेश जनवरी 2011, 23 अगस्त 2014
22	आयुध, नारी विशेषांक		हाउस हरिओम नगर भावनगर, गुजरात
23	नयी दुनिया		बिलासपुर छत्तीसगढ़
24	जनसत्ता		जनसत्ता नई दिल्ली
25	शोध संदर्भ प्रवात		प्रकोष्ठ शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बिलासपुर, छत्तीसगढ़
26	राँची एक्सप्रेस (दैनिक)		
27	एक और अन्तरीप		झोटवाड़ा, जयपुर राज.

शब्द कोश – विश्व कोश

1. सम्पादक डॉ. हरदेव बिहारी : हिन्दी शब्द कोष, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली 2011
2. सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी साहित्य कोश भाग–1, भाग–2, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी 2005
3. डॉ. गणपति चन्द्रगुप्त : हिन्दी भाषा एवं साहित्य विश्वकोष एटलांटिक पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली 1995
4. वामन शिवराज आप्टे : संस्कृत हिन्दी कोश, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली 1967
5. पं. ईश्वरचन्द्र : परिजाम कोश, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली 2004
6. ब्रजेन्द्र चतुर्वेदी : हिन्दी वृहद कोश भाग–2, बुक्स एन बुक्स, दिल्ली 2007
7. डॉ. रमाशंकर शुक्ल रसाल : भाषा शब्द कोष, रामनारायण लाल बनीप्रसाद, इलाहाबाद 1962
8. डॉ. भोलानाथ तिवारी : हिन्दी पर्याय कोश, प्रभात प्रकाशन दिल्ली 1990
9. डॉ. बचुभाई, डॉ. रतिलाल : त्रिभाषा शब्दकोष गुर्जर ग्रंथ, अहमदाबाद 2000
10. सम्पादक रामचन्द्र वर्मा : संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी 1971
11. डॉ. वर्णेकर भास्कर : संस्कृतवाद् मयकोशः भारतीय भाषा परिषद शेम्यपीयसरिण कोलकाता।
12. सकरिया : राजस्थानी हिन्दी शब्द कोशी पंचशील प्रकाशन, जयपुर।

13- A.S. Hornby : Oxford advanced leorner's Dischionory

14- Dr. B.S. Pandit : Amit stadent councertdist ionory

15- Willion little : The short oxford dictionory